अधिक लाभ के लिए भिण्डी लगायें

भिण्डी उगाकर पाएं अधिक लाभ

भिण्डी सब्जी फसल 75 से 80 दिन में तैयार होकर की पैदावार दे देती है। भिण्डी की सब्जी पौष्टिक, लौह तत्व से परिपूर्ण, कब्ज विनाशक एवं विटामिन युक्त होती है। घरेलू खपत के अलावा कुल सब्जियों के निर्यात में भिण्डी का 50 प्रतिशत से भी अधिक योगदान है।

भिण्डी को गर्मी तथा वर्षा ऋतु में सफलतापूर्वक उगाकर अच्छा लाभ ले सकते हैं। इस समय खाली खेतों में भिण्डी की फसल उगाकर बाजार में अच्छा भाव मिलने से मोटा मुनाफा कमा सकते हैं। भिण्डी की उन्नत किस्मों को उगाकर प्रति एकड़ 50 से 60 क्विंटल उपज ली जा सकती है।

बिजाई का समय

गर्मी की फसल की बिजाई फरवरी-मार्च तथा वर्षा ऋतु में जून जुलाई में की जानी चाहिए। बसंतकालीन उगाई गई भिण्डी की बाजार में ज्यादा मांग रहती है।

खेत की तैयारी

बिजाई से पहले खेत में गोबर खाद डालकर जुताई व पाटा लगाकर अच्छी प्रकार तैयार कर लें। इस समय भिण्डी की बिजाई डोलियों में भी कर सकते हैं।

उन्नत किस्में

व्ही.आर.ओ.-6,पद्मनी, संकर किस्में विजय, विशाल हाइब्रिड-7, विशाल हाइब्रिड-8, अर्का, अनामिका, पूसा मखमली भिण्डी की हिसार उन्नत, पी-7, वर्षा, उपहार तथा पूसा सावनी रोगरोधी एवं ज्यादा उपज देने वाली किस्में हैं। हिसार उन्नत तथा वर्षा उपहार किस्में बोने के 45 दिन बाद फल देना शुरू कर देती है।

बीज मात्रा

बीज दर 15-20 किलो प्रति हेक्टेयर सामान्य, संकर किस्म 6 किलो प्रति हेक्टेयर बसंतकालीन भिण्डी के लिए 12 से 15 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ बोना चाहिए। बोने से पहले बीज को रातभर पानी में भिगोएं। बिजाई 30 सेंटीमीटर चौड़ी डोलियों में दोनों तरफ किनारों पर 10 सेमी की दूरी पर तथा वर्षा ऋतु में लाइन का फासला 45 से 60 तथा पौधे से पौधा 30 सेमी रखें।

खरपतवार नियंत्रण = आवश्यकतानुसार निंदाई खरपतवार नियंत्रण 40 दिनों तक करें। एक सप्ताह के अंतराल पर 3 से 4 गुड़ाई पर्याप्त है। 20 से 35 दिन बाद निराई गुड़ाई करें। बिजाई से एक दिन पहले फलूक्लोरोलिन की 400 ग्राम मात्रा 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें तथा 3 से 4 सेमी. गहरी रेक कर देने से भी खरपतवार नियंत्रण हो जाता है।

सिंचाई = साप्ताहिक सिंचाई अनुशंसित है।

तुड़ाई = 45 से 50 दिनों बाद शुरू प्रति 2-3 दिनों के अंतराल में।

उपज = लगभग 150 क्विंटल प्रति हेक्टेयर।

अन्य उपयोग = गुड़ बनाते समय गुड़ साफ करने के लिए।

सावधानियां

कीटग्रसित फल तोड़कर भिण्डी में दवा दें तथा कीटनाशक दवाओं का प्रयोग कृषि विशेषज्ञों की सलाह से करना चाहिए। कीटनाशक दवा छिड़काव से पहले फल तोड़ लें तथा छिड़काव के बाद भी जब भिण्डी तोड़े उन्हें अच्छी प्रकार से पानी से धोकर ही खाएं या मंडी ले जाएं एवं फल तुड़ाई के समय मानव स्वास्थ्य हित मेलाथियान या डाईक्लोरमास जैसी सुरक्षित दवाओं का उपयोग करें।

संतुलित खाद एवं उर्वरक

बोते समय एक कट्ठा डीएपी तथा 20 किग्रा यूरिया प्रति एकड़ तथा 25 किग्रा यूरिया बोने के तीन सप्ताह बाद तथा 25 किग्रा. फल आने के समय दें।

- गोबर खाद 20 से 25 टन प्रति हेक्टेयर बुवाई
- नत्रजन 60 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के समय
- नत्रजन 30 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के 30 दिनों बाद
- नत्रजन 30 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के 45 दिनों बाद
- स्फुर 60 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के समय
- पोटाश 60 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के समय

कीट नियंत्रण

रस चूसक कीट जैसे हरा मच्छर, सफेद मक्खी, मोला, फुदका नियंत्रण के लिए मेटासिस्टाक्स 0.025 प्रतिशत या कार्बोरिल 0.02 प्रतिशत 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें। लाल मकड़ी नियंत्रण के लिए घुलनशील गंधक 3 ग्राम प्रति लीटर पानी या डायकोफाल 5 मिली प्रति लीटर पानी की दर से, फल छेदक इल्ली नियंत्रण के लिए मेटासिस्टाक्स 0.025 प्रतिशत या कार्बोरिल 0.02 प्रतिशत 15 दिनों के अंतराल पर पुन- छिड़काव करें।

लगाएं जायद में मूंगफली

भूमि का चयन एवं तैयारी

मूंगफली की खेती के लिये दोमट, बलुआर दोमट या हल्की दोमट मिट्टी उपयुक्त रहती है। गर्मियों में मूंगफली, आलू, मटर, सब्जी मटर तथा राई की कटाई के बाद खाली खेतों में सफलतापूर्वक की जा सकती है। मूंगफली के लिये भारी दोमट मिट्टी का चयन न करें। खेत की तैयारी अच्छी प्रकार से कर लें 2-3 जुताई कल्टीवेटर से कर मिट्टी को भुरभुरा बना लें तथा जुताई के बाद पाटा लगाकर खेत समतल कर लें। इसके बाद कम अवधि में पकने वाली गुच्छेदार प्रजातियों का चयन करें जिसमें डीएच 86, आर-9251, आर 8808 आदि किस्मों का चयन किया जा सकता है। ध्यान रखें बीज का चयन रोग रहित उगायी गई फसल से करें। ग्रीष्मकालीन मूंगफली के लिये 95-100 किग्रा की दर से बीज दर प्रति हेक्टेयर उपयोग करें।

बीजोपचार

बीज को बोने से पूर्व थायरम 2 ग्राम+ कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम प्रति किलो बीजदर से उपचारित कर लें। फफूंदनाशक दवा से उपचार के बाद 1 पैकेट राइजोबियम कल्चर को 10 किग्रा बीज में मिलाकर उपचार करें।

बुवाई की विधि

खेत में पर्याप्त नमी के लिये पलेवा देकर जायद में मूंगफली की बुवाई करें। यदि खेत में नमी उचित नहीं होगी तो मूंगफली का जमाव अच्छा नहीं होगा। गुच्छेदार प्रजातियां खेती के लिये उपयुक्त रहती हैं। इसलिये बुवाई 25-30 सेमी की दूरी पर देशी हल से खोले गये कूंडों में 8-10 सेमी की दूरी कर करें। बुवाई के बाद खेत में क्रास लगाकर पाटा लगा दें।

बुवाई का समय

5 मार्च से 15 मार्च बुआई कर लें। देरी से बुवाई करने पर वर्षा प्रारंभ होने की दशा में खुदाई के बाद फल्लियों की सुखाई में कठिनाई होती है।

खाद एवं सिंचाई

यूरिया 45 किलो, सिंगल सुपरफास्फेट 150 किलो व म्यूरेट ऑफ पोटाश 60 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करें। मूंगफली में नत्रजन की अधिक मात्रा का उपयोग न करें अन्यथा यह मूंगफली की पकने की अवधि बढ़ा देगा। पलेवा देकर बुवाई के बाद पहली सिंचाई 20 दिन बाद करें। दूसरी सिंचाई 30-35 दिन पर तीसरी सिंचाई 50-55 दिन पर करें।

खुदाई व भण्डारण

खुदाई तभी करें जब मूंगफली के छिलके के ऊपर नसें उभर आयें, भीतरी भाग कत्थई रंग का हो जाये व मूंगफली का दाना गुलाबी रंग का हो जाये। खुदाई के बाद फलियों को छाया में सुखाकर रखें।

कम लागत में फलेगी मूंग

खेत की तैयारी

रबी की कटाई के बाद दो-तीन बार हल चलाकर मिट्टी को भुरभुरा व नींदा रहित करें। पाटा लगाकर खेत को समतल करें।

उन्नत बीज का चुनाव, मात्रा व उपचार

शुद्ध, प्रमाणित, रोग मुक्त बीज का चलन करें। भंडारित बीज को साफ करके, अंकुरण परीक्षण करने के बाद बोने हेतु उपयोग में लायें। बोनी हेतु के. 851, पीडीएम 139, पूसा बैसाखी, पूसा विशाल, जवाहर मूंग 131 में से किसी भी एक किस्म का 12-15 किग्रा, बीज प्रति हेक्टर के मान से उपयोग करें। ग्रीष्मकालीन मूंग की बोनी का उपयुक्त समय मार्च से अप्रैल का प्रथम सप्ताह है। कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. तथा बीज की दूरी 10 सेमी रखें साथ ही बीज को 3-4 सेमी की गहराई पर लगाएं। बुवाई से पूर्व बीज को कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा द्वारा प्रति किग्रा बीज दर से उपचार करें ताकि बीज जनित रोगों से छुटकारा मिल सके।

खाद व उर्वरक

मिट्टी परीक्षण के आधार पर उर्वरकों का उपयोग करें। यूरिया, सिंगल सुपर फास्फेट व म्यूरेट ऑफ पोटाश की 50-375-30 किग्रा प्रति हेक्टेयर के मान से उपयोग करें। 100 किग्रा डीएपी के साथ 30 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति हेक्टर का उपयोग भी किया जा सकता है। बुवाई से पहले फफूंदनाशक से उपचारित बीज को राइजोबियम व पीएसबी कल्चर से

निवेशित करें चाहिए। इस हेतु 5 ग्राम कल्चर प्रति किग्रा बीज के मान से उपयोग किया जा सकता है।

सिंचाई - गर्मियों में फसल होने के कारण फसल को 5-6 सिंचाईयों की आवश्यकता पड़ती है। क्रांतिक अवस्था जैसे शाखा बनते समय, फलियां बनते समय तथा दाना भरते समय सिंचाई करना आवश्यक होगी।

पौध संरक्षण

मूंग की फसल में कई बार पत्तियों पर भूरे रंग के धब्बे बनते हैं जो फैलकर पूरे पौधे को झुलसा देती है। साथ ही भभूतिया रोग का प्रकोप होता है। इस रोग में पत्तियों पर सफेद चूर्ण जमा हुआ दिखता है। दोनों ही रोगों के नियंत्रण के लिए कार्बेन्डाजिम की एक ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। मूंग की फसल पर फली बीटल, सफेद मक्खी, थ्रिप्स, फली छेदक कीटों का प्रकोप होता है। इनके नियंत्रण मूंहेतु प्रोफेनोफॉस 400 मिली 200 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ के मान से छिड़काव करें।

उपज

मूंग की फलियां गुच्छों में लगती है तथा अधिकांश प्रजातियों में फल्लियां एक साथ नहीं पकती अत- 2-3 बार तोड़ाई पर पूरी फसल की फलियां तोड़ ली जाती हैं। मूंग के दानों को बैल चलाकर या डंडे से पीटकर अलग किया जाता है। पौध संरक्षण अपनाने पर 7-8 क्विंटल मूंग प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है।

स्वस्थ मिट्टी परीक्षण हेतु मिट्टी परीक्षण आवश्यक

मिट्टी परीक्षण

मिट्टी परीक्षण एक रसायनिक प्रक्रिया है जिसमें मृदा के लिये आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति का निर्धारण किया जाता है, इस विधि से फसल बोने से पूर्व ही पोषक तत्वों की आवश्यक मात्रा ज्ञात हो जाती है। ताकि आवश्यक उर्वरकों की पूर्ति समयानुसार की जा सके।

मिट्टी की जाँच क्यों?

पौधों की वृद्धि एवं जीवन चक्र पूरा करने के लिये 17 पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है जिनमें आक्सीजन, कार्बन एवं हाईड्रोजन की पूर्ति वायु तथा जल से होती है। शेष 14 तत्वों की आपूर्ति मिट्टी से होती है। मिट्टी में सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी होने से फसलों के उत्पादन एवं गुणवत्ता में काफी गिरावट आती है। मिट्टी परीक्षण द्वारा न केवल उर्वरक एवं खादों की सही मात्रा की आवश्यकता ज्ञात की जा सकती है। बल्कि सही उर्वरक के चुनाव, सही प्रयोग विधि व सही समय आदि अन्य पहलुओं का भी पता चलता है ताकि प्रति इकाई पोषक तत्व की मात्रा से अधिकतम लाभ प्राप्त किया जा सके।

मिट्टी परीक्षण के उद्देश्य

- मिट्टी में पोषक तत्वों की सही मात्रा ज्ञात करना तथा उसके आधार पर संतुलित उर्वरकों का उपयोग करना।
- मिट्टी की विशिष्ठ दशाओं का निर्धारण करना जिससे मिट्टी को कृषि विधियों और मिट्टी सुधारक पदार्थों क सहायता से सुधारा जा सके।

मिट्टी की जांच कब करायें

मिट्टी की जांच कराने के लिये सर्वोत्तम समय गेहूं की कटाई के उपरांत मई एवं जून का महीना उपयुक्त होता है इसके अलावा वर्षा ऋतु के उपरांत अक्टूबर व नवम्बर माह में भी मिट्टी परीक्षण कराया जा सकता है।

खेत से मिट्टी नमूना एकत्र करना

मिट्टी परीक्षण हेतु मिट्टी का नमूना सही ढंग से लेना अति आवश्यक है। जिस खेत से नमूना लेना हो उस खेत पर 8-10 अलग-अलग स्थानों पर निशान लगाकर खुरपी या औगर की सहायता से 15 से.मी. की गहराई तक 1/2 कि.ग्रा. मिट्टी इकट्ठा कर लें। खुरपी की सहायता से नमूना एकत्र करने के लिये खेत के विभिन्न स्थानों से भूमि की ऊपरी परत को साफ कर अंग्रेजी के 'ङ' शब्द के आकार का 6 इंच गहरा गड्ढा बनाया जाता है फिर गड्ढे के दोनों ओर की परतों को खुरपी की सहायता से मिट्टी को एकत्र कर लिया जाता है। पर ध्यान रहे फावड़े, खुरपी या किसी भी यंत्र में जंग नहीं लगा होना चाहिए। इस प्रकार एकत्र सभी नमूनों को एक साथ मिलाकर 400-500 ग्राम एक प्रतिनिधि नमूना तैयार किया जाता है। जिसे जांच हेतु प्रयोगशाला भेजा जाता है। प्रतिनिधि नमूना तैयार करने हेतु एकत्र सभी नमूने को साफ तख्ते या प्लास्टिक की शीट पर फैलाकर चार बराबर भागों में बांट लेना चाहिए। एक भाग छोड़कर पुनः तीन भाग को आपस में मिलाकर चार भागों में बांट लें जब मिट्टी 400-500 ग्राम बच जाय तो एक साफ कपड़े की थैली में भरकर पहचान चिन्ह लगाकर प्रयोगशाला में जांच हेतु भेज दें।